Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

समास

भाग–2

LIVE 03:00 PM

समास-

दो अथवा अधिक शब्दों के मध्य की विभक्तियों अथवा लगाव के शब्दों (कारक चिन्हों) का लोप होकर जिस शब्द का निर्माण होता है, वह सामासिक पद कहलाता है।

समास के आवश्यक तत्त्व-

• समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है।
• दो या दो से अधिक पद मिलकर एक पद हो जाते हैं।
'एक पदी भाव समास' है।
• समास में पदों के विभक्ति-प्रत्यय लुप्त हो जाते हैं।

समास विग्रह-

जब समस्त पद के सभी पद अलग-अलग किए जाते हैं तब उस प्रक्रिया को समास-विग्रह कहते हैं,

पुस्तकालय = पुस्तक का आलय
रसोईघर = रसोई के लिए घर

समास और सन्धि में अन्तर-

(i) समास शब्दों का मेल है जबकि सन्धि वर्णों का मेल है।

(ii) समास में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन नहीं होता है जबकि सन्धि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन भी होता है।

(iii)समास के वर्णों को अलग करने को समास विग्रह कहते हैं जबकि सन्धि को तोड़ने को सन्धि विच्छेद भी कहते हैं।

(iv) समास में बहुत से पदों के मध्य के कारक चिह्नों का अथवा समुच्चय बोधकों का लोप हो जाता है, जबकि सन्धि में ऐसा नहीं होता है।

1.अव्ययीभाव समास-जिस समास का प्रथम पद प्रधान हो और वह अव्यय हो, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

2.तत्पुरुष समास- जिस समास में उत्तर-पद अर्थात् अन्तिम पद की प्रधानता हो, उसे 'तत्पुरुष समास' कहते हैं।

3.कर्मधारय समास-जिस सामासिक शब्द का उत्तर पद प्रधान हो और पूर्वपद का उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का सम्बन्ध हो।

4द्विगु समास-जिस सामासिक शब्द का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं।

5.द्वन्द्व समास- जिस सामासिक शब्द के दोनों पद प्रधान होते हैं।

6.बहुव्रीहि समास-जिस समास में न तो पूर्व पद प्रधान होता है और न ही उत्तर पद प्रधान होता है,बल्कि दोनों पद मिलकर एक अन्य नया पद (अर्थ) प्रकट करते हैं।

तत्पुरूष समास कारक चिह्न

तत्पुरूष समास	कारक चिह्न
1.कर्म	को
2.करण	से, के द्वारा
3.सम्प्रदान	को,के लिए
4.अपादान	से
5.सम्बन्ध	का,की,के /ना ,नी,ने /रा,री,रे
6.अधिकरण	में,पर

1.विशेषण और संज्ञा के संबंध वाले शब्द में कौन-सा समास होता है?

(a) कर्मधारय

(c) द्वंद्व

(b) बहुव्रीहि

(d) द्विगु

कर्मधारय समास-

जिस सामासिक शब्द में प्रायःप्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो अथवा उपमान- उपमेय का सम्बन्ध हो,
या
जिस समास में प्रथम पद विशेषण और अंतिम पद संज्ञा,सर्वनाम हो, को ही कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे-

समस्त-पद	समास विग्रह
चन्द्रमुख	चन्द्र के समान मुख
चरणकमल	कमल के समान चरण
महापुरुष	महान है जो पुरुष
महादेव	महान है जो देव
महाकाव्य	महान है जो काव्य

2.किस समास से बने शब्द का रूप,लिंग या वचन के कारण परिवर्तन नहीं होता है-

(a) कर्मधारय

(b) बहुव्रीहि

(c) द्वंद्व

(d) अव्ययीभाव

अव्ययीभाव समास-

जिस समास का प्रथम पद प्रधान हो और वह अव्यय हो, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। प्रथम पद में लिंग, वचन आदि दृष्टि से इसके रूप में कोई परिवर्त्तन नहीं होता ।

सामान्यतःनिम्न शब्द प्राप्त होते हैं- अनु ,आ,यथा,प्रति,भर,यावत, हर आदि ।

जैसे-

प्रतिदिन	हर दिन
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रत्येक	एक-एक के प्रति
यथाविधि	विधि के अनुसार
यथासामर्थ्य	सामर्थ्य के अनुसार

3. कौन-सा समास-विग्रह सही नहीं है?

(a)दाल-रोटी - दाल और रोटी

(b) पंचानन - पाँच हैं जिसके आनन (शिव)

(d) सुलोचना - सुंदर हैं लोचन जिसके

(c) पुस्तकालय - पुस्तक और आलय

4.'चन्द्रवदन' शब्द का विग्रह सहित समास बताइए।

(a) चन्द्र है वदन पर जिसके- बहुव्रीहि
(b) चन्द्र और वदन- द्वन्द्व समास
(c) चन्द्र युक्त वदन- अव्ययीभाव
(d) चन्द्र पर वदन- कर्मधारय समास

5.'अस्त्र-शस्त्र' शब्दांश में विग्रह सहित समास बताइए -

(a) अस्त्र के साथ शस्त्र- अव्ययीभाव समास
(b) अस्त्र और शस्त्र- द्वन्द्व समास
(c) अस्त्र या शस्त्र- तत्पुरुष समास
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6.रसाईघर में कौन-सा समास है?
(a)तत्पुरुष (b)कर्मधारय (c) बहुव्रीहि (d) द्विगु

7.प्रतिदिन में कौन-सा समास है?
(a)कर्मधारय(b) अव्ययीभाव(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

8.राम-लक्ष्मण में समास बताइए
(a)तत्पुरुष (b)कर्मधारय (c) बहुव्रीहि (d) द्वंद्व

9.चंद्रशेखर में कौन-सा समास है?
(a)कर्मधारय (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

10. यथाशीघ्र-
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) अव्ययीभाव

11.धनहीन –
(a) द्विगु (b) तत्पुरुष
(b) (c) द्वन्द्व (d) अव्ययीभाव

12.अन्न-जल –
(a)द्वन्द्व(b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) द्विगु

13.अष्टाध्यायी –
(a)द्विगु (b) अव्ययीभाव
(c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष

14.यथासमय –
(a)अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(b)(c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष

15.रोग पीड़ित-
(a)कर्मधारय (b) द्वन्द्व
(c) बहुव्रीहि (d) तत्पुरुष

1.अव्ययीभाव समास-जिस समास का प्रथम पद प्रधान हो और वह अव्यय हो, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

2.तत्पुरुष समास- जिस समास में उत्तर-पद अर्थात् अन्तिम पद की प्रधानता हो, उसे 'तत्पुरुष समास' कहते हैं।

3.कर्मधारय समास-जिस सामासिक शब्द का उत्तर पद प्रधान हो और पूर्वपद का उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का सम्बन्ध हो।

4द्विगु समास-जिस सामासिक शब्द का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं।

5.द्वन्द्व समास- जिस सामासिक शब्द के दोनों पद प्रधान होते हैं।

6.बहुव्रीहि समास-जिस समास में न तो पूर्व पद प्रधान होता है और न ही उत्तर पद प्रधान होता है,बल्कि दोनों पद मिलकर एक अन्य नया पद (अर्थ) प्रकट करते हैं।

तत्पुरूष समास   कारक चिह्न

1.कर्म	को
2.करण	से, के द्वारा
3.सम्प्रदान	को,के लिए
4.अपादान	से
5.सम्बन्ध	का,की,के /ना ,नी,ने /रा,री,रे
6.अधिकरण	में,पर

16.'पाप-पुण्य' शब्दांश में कौन-सा समास है?
(a) द्वन्द्व समास (b) द्विगु समास
(c) तत्पुरुष समास (d) कर्मधारय समास

17.लव-कुश' शब्द में कौन-सा समास है?
(a) द्विगु समास (b) द्वन्द्व समास
(c) तत्पुरुष समास (d) कर्मधारय समास

18.'चक्रधर' शब्द में कौन-सा समास है?
(a) अव्ययीभाव समास (b) द्विगु समास
(c) बहुव्रीहि समास (d) द्वन्द्व समास

19.'राजा और रंक' में कौन-सा समास है?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि
(c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

20.'महाकाव्य' में कौन-सा समास है?
(a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व

1.किस वाक्य में क्रिया वर्तमान काल में है?
(a) उसने फल खा लिए थे।
(b) मैं तुम्हारा पत्र पढ़ रहा हूँ।
(c) राम दिल्ली जाएगा।
(d) कल वे आने वाले थे।

2.'काल' के कितने प्रकार हैं?
(a)सात
(b) तीन
(c) चार
(d) पाँच

3.क्रिया के जिस रूप से यह आभास होता है कि कार्य का भूतकाल में समाप्त होना सम्भव था किन्तु किसी कारणवश न हो सका।
(a)आसन्न भूत
(b) हेतुहेतुमद् भूत
(c) अपूर्ण भूत
(d) इनमें से कोई नहीं

वर्त्तमान काल: इससे यह प्रकट होता है कि क्रिया का कार्य अभी हो रहा है,
(i) सामान्य वर्त्तमान- यह क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया के व्यापार का होना वर्त्तमान काल में सामान्य रूप में पाया जाता है।(ता/ती/ते)
जैसे-1. रमा विश्वविद्यालय में पढ़ती है।2.राधा विद्यालय में पढ़ती है।

(ii) अपूर्ण वर्त्तमान : यह क्रिया में का वह रूप है, जिससे क्रिया का आरम्भ होना ज्ञात किया जाता है किन्तु क्रिया का समाप्त होना अज्ञात रहता है।(रहा है/रही है/रहे है)
जैसे-1.श्याम समाचार पत्र पढ़ रहा है।2.स्मृति गा रही है।

(iii) संदिग्ध वर्तमान काल-
क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल क्रिया के होने या करने पर शक हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते है। अथार्त जिन वाक्यों के अंत में ता होगा, ती होगी, ते होंगे आदि आते हैं, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।
जैसे- राम खाना खाता होगा।
(iv) संभाव्य वर्तमान काल
संभाव्य का अर्थ होता है संभावित या जिसके होने की संभावना हो। इससे वर्तमान काल में काम के पूरे होने की संभावना होती है उसे संभाव्य वर्तमान काल कहते हैं।
जैसे -वह आया हो।

(i)सामान्य भूतकाल : इसमें भूतकाल में कि गई क्रिया का निश्चित समय ज्ञात नहीं होता।
1.राम आया। 2. रवीना गयी।

(ii) आसन्न भूतकाल : इससे यह ज्ञात होता है कि क्रिया का कार्य अभी समाप्त हुआ है।
(चुका हैं /चुकी हैं /चुके हैं)- मैं खाना खा चुका हूँ।

(iii) पूर्ण भूतकाल: इससे यह ज्ञात होता है कि कार्य समाप्त हो चुका है एवं कार्य को समाप्त हुए अधिक समय हो चुका है। (था/थी/थे)
मैंने नाटक लिखे थे।

(iv)सन्दिग्ध भूतकाल: इससे क्रिया के कार्य की समाप्ति में कुछ सन्देह का बोध होता है।
(होगा, होगी, होगे)
जैसे- उसने कहानी लिखी होगी।

(v) अपूर्ण भूतकाल: इससे यह प्रकट होता है कि कार्य भूतकाल में हो रहा था पर यह ज्ञात नहीं होता कि कार्य समाप्त हुआ अथवा नहीं? (था रहा,थी रही,थे रहे)
जैसे-1.वह गा रही थी।2.तृप्ति पढ़ रही थी।

(vi) हेतुहेतुमद् भूतकाल :इससे यह ज्ञात होता है कि कार्य का भूतकाल में समाप्त होना सम्भव था किन्तु किसी कारणवश न हो सका।

1. सामान्य भविष्य **काल** -(सहायक क्रिया-एगा,एगी,एगे)
क्रिया का वह रूप जिससे यह ज्ञात हो कि, क्रिया आने वाले समय में सामान्य रूप से होगी ।
जैसे- मैं कल मुंबई जाऊँगा।

2.संभाव्य भविष्य **काल** -
ऐसी क्रियाएँ जिससे यह ज्ञात हो कि आने वाले समय में क्रिया के होने की संभावना हो। जैसे-शायद कल बारिश होगी।

3.हेतुहेतुमद् भविष्य **काल** -
क्रिया का वह रूप जिससे यह ज्ञात हो कि आने वाले समय में क्रिया का होना किसी अन्य क्रिया के होने पर निर्भर करेगा,
जैसे-
अगर बारिश होगी तो फसल अच्छी उगेगी।
अगर पढ़ोगे तो पास हो जाओगे।

पर्यावाची /समानार्थी शब्द -

अन्वेषण-

अनुसंधान, खोज, गवेषण, जाँच, छानबीन, पूछताछ, शोध।

अभिमान-

अस्मिता,अहं, अहंकार, अहंभाव, गर्व, घमंड, दंभ,मद, मान,।

अमृत-

सोम, सुधा, अमिय, पीयूष, मधु, अमी, सुरभोग।

ईश्वर-

परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, जगदीश, अगोचर, अनंत, जगन्नाथ, ब्रह्मा,परमेश, जगतप्रभु।

उग्र-
प्रचंड,उत्कट,तेज,महादेव,तीव्र,विकट ।

कमल-
कज,पंकज,जलज,सरोज,नीरज,अंबुज,वारिज,इंदीवर,
राजीव,उत्पल,अरविंद ।

कुबरे-
अनद,यक्षराज,धनाधिप,किन्नरेश,राजराज ।

कुत्ता-
श्वा,श्वान,कुक्कुर,शुनक,सारमेव ।

खग-
विहग,विंग,पक्षी,द्विज,चिड़ियां,पंक्षी,पखेरू ।

धन्यवाद...